राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 25-26 फरवरी, 2020

अहिंसा का दर्शन और गाँधी

संगोष्ठी की अवधारणा

'अहिंसा' न कोई भौतिक सिद्धांत है, न दार्शनिक आधारतत्व और न कोई नीतिपरक धर्म-सिध्दांत, बल्कि यह मानवीय जीवन का प्राथमिक एवं सबसे उच्च सत्व है। इसके अतिरिक्त यह एक मानसिक अभिवृत्ति है, जीवन के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण का संवाहक है तथा समस्त जैवसंबंधों और व्यवहारों हेतु निरंतर दिशाबोधक घटक है।

'अहिंसा' न केवल भौतिक है, बल्कि यह एक जैवरसायन है जो जीवन की पवित्रता को कायम रखती है तथा जीवन-संसार के लिए जो भी हितकारी स्वरूप है, उसका समावेश कराती है।

मानवजाति इससे पूर्व कभी भी आतंक और हिंसा के ऐसे आयामों से आच्छादित नहीं थी जो मानव को मानव स्वरूप में विद्यमान रहने के लिए समस्या पैदा करे। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि वर्तमान संकट का आलकन करते हुए इसका समाधान निकाला जाय। सौभाग्य की बात है कि विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में भारत की अहिंसक-संस्कृति सर्वोच्च है और आज जब हमने युध्द और हिंसा के विकल्प के रूप में इसे प्राप्त किया है तो वर्तमान समय में यह ज्यादा जीवित, और विकसित तथा अत्याधिक प्रासंगिक लगती है।

मूल्य-विघटन के इस काल में और गहराते सभ्यता के संकट में उलझा विश्व मनस् शांति तथा प्रगति के लिए विकल्प के रूप में गाँधी विचार अपना रहा है, क्योंकि मानवीय संसार में मानव-मुक्ति, मानवीय-अस्तित्व और मानव-कल्याणार्थ अहिंसा की अपनी मान्यता एक प्रभविष्णु तथा क्रियाशील बल की तरह है। इतिहास के पृष्ठों में इसके प्रमाण का अभाव नहीं है कि अहिंसा अपनी प्रभावशाली राजनैतिक भूमिका के लिए विश्व को एक दिशा दे चुकी है। यह एक मान्य तथ्य है कि अहिंसा ने युद्ध और हिंसा के सिध्दांत को परिवर्तित कर दिया है और अब यह धार्मिक एकाधिकार से बाहर निकलकर राजनीतिक मूल्यों को आच्छादित करती हुई सामाजिक जीवन में प्रसरण कर गई है।

एक अहिंसात्मक व्यक्ति दूसरों के प्रति करूणा का भाव तथा मानवीय समझ रखता है और हमेशा पीडित व उपेक्षितों की सेवा अपने सुख, सुभीता एवं लाभ की परवाह किये बगैर करता है। वह अपने चिंतन में, अपने वचन में, अपने व्यवहार में, अपने चरित्र में तथा अपने मूल्य में मैत्री-भाव का आग्रही होता है। आइंस्टीन के शब्दों में यही मूल्य-प्रतिष्ठा उसमें नैतिकता, उसमें जीवन की गरिमा और सौन्दर्य ला देती है। और जब जीवन का सौन्दर्य जाग जाता है तो जीवन में उषा की लाली आच्छादित हो जाती है और इसी उषा की लाली में अहिंसा का उत्स प्रतिबिम्बित होकर जीवन को अहिंसात्मक सौन्दर्य से भर देता है। गाँधी के जीवन-दर्शन की यही पीठिका है! इसी पीठिका की परिधि में **अहिंसा का दर्शन और गाँधी** विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन अहिंसा-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में उन मूल्यों की तलाश है जिसे गाँधी ने प्रत्यक्षत: जिया है और मानवता के लिए एक अविकल जीवन-दर्शन दिया है।

गाँधी 150वीं की परिबोधना

गाँधी का शताब्दी वर्ष (1969) भी देश दुनियाँ ने जोर-शोर से मनाया, 125वीं (1994) जयंती भी उसी रफ्तार की कड़ी थी, और अब 150वीं जयंती (2019) मनाने की तैयारी भी देश ने 2017 से ही प्रारंभ कर दिया है और यह नैरंतर्यता 2020 तक चलती रहेगी। यानी 2017-18, 2018-19 तथा 2019-2020 गांधी परिबोधना का परिबोधक वर्ष है, उसी कड़ी में **अहिंसा का दर्शन और गाँधी** गाँधी के **150वीं जयंती** की परिबोधना है, जिसकी अहमियत इसीलिए भी है क्योंकि गाँधी की दार्शनिक विचारधारा पर तो तमाम बातें होती आई हैं परंतु गाँधी दर्शन पर अनुचिंतन की प्रगल्भता कहीं भी प्रदर्शित नहीं हुई। चूँकि गाँधी स्वभावत: एक आध्यात्मिक मन के मार्मिक चितेरा थे इसीलिए उनका कोई भी दर्शन-चिंतन मॉरीलिटी की मार्मिकता का जीवन-व्यवहार में पर्याय है। अर्थात् नीति की नैतिकता और आस्था का अग्निवेश उनका प्रबल पक्ष रहा है, अस्तु; उनका दर्शन व्यवहारिक-दर्शन (Applied Philosophy) का एक प्रबुध्द परिवेश निर्मित करता है। अत: गाँधी 150वीं जयंती पर हमारी यह संगोष्ठी उनके अंतस् के आलोक को देखने का प्रयास है।

संगोष्ठी की प्रांसगिकता

आदमी और देवता के बीच का जो मनुष्यत्व होता है, वह अद्भुत, उमदा और विस्मयकारी होता है। गाँधी का मनुष्यत्व भी इसी अद्भुत और विस्मयकारी के त्रियुगी योग से निर्मित हुआ था। अर्थात् गाँधी आदमी और देवता के मध्य के मनुष्य थे, इसलिए जिस पथ पर वे चले, पथ स्वर्णिम होता चल गया, आस्था के पथिक साथ होते चले गये और लक्ष्य साथ-साथ चलने लगे.......

भारतीय चिंतन परम्परा के एकदम व्यावहारिक फलक पर गाँधी का चिंतन सार्वकालिक है। गाँधी को अपने जीवन के हर पहलू पर सत्य के प्रयोग से रुबरू हुए बिना कोई कदम उठाना उनके लिए संभव नहीं था, वे हर पहलू में सत्य के साथ थे। सत्य की दृढ़ता ने ही 'सत्य ही ईश्वर' कहने को आश्वस्त किया क्योंकि उन्हें यह ज्ञात हो गया था कि एक घोर नास्तिक भी 'सत्य' को 'असत्य' कहने से मुँह मोड़ेगा। और यह भी है कि सत्य का स्वरूप एक होते हुए भी सबके लिये अलग-अलग अस्तित्व के साथ खड़ा होता है, इसलिये सबका अपना-अपना सत्य है। अर्थात् सभी समुदायों के अपने-अपने इष्ट हैं; उनके लिये वही सत्य है; लेकिन सत्य जो 'है' वह सार्वधार्मिक है अर्थात् सत्य धर्म का पालन सभी के साथ है यानी जिसने जो धारण किया उसके लिए वही सत्य है और सब में एक आस्था स्थापित है। उस आस्था की प्रार्थना ही सत्य है, इसलिए गांधी ने चतुर्दिक प्रमाणन से पाया कि 'सत्य ही ईश्वर है' और सत्य उनके जीवन की 'कोर फिलॉसफी' बन गई जिसे विश्वव्यापी संसार ने सहज स्वीकार किया क्योंकि जीवन में सबको सत्य की व्यावहारिकता से पाला पड़ता ही है, उससे मुँह मोड़ना असंभव है। गांधी ने स्वीकारा है, 'सत्य की खोज में ही अहिंसा का साधन मुझे प्राप्त हुआ। यदि मेरा कोई सिद्धांत कहा जाय तो वह इतना ही है और मैंने जो कुछ किया है वही सत्य और अहिंसा की सबसे बड़ी टीका हैं' (सावली, 03-03-1936, वाड्.मय खंड 62, पृ. 238) सत्य के संधान में सत्याग्रह मिला, अहिंसा से उसकी प्रतिपूर्ति हुई। इस प्ररिप्रेक्ष्य में अहिंसा-दर्शन एक नवीन दृष्टिकोण और जीवन-दर्शन का पर्याय है। गाँधी ने अहिंसा-दर्शन की अनुभूति को कभी भी जीवन-रहस्य का उद्रेक नहीं समझा, बल्कि उसे जीवन-व्यवहार की प्रणाली में ढालकर व्यावहारिक बनाया। इस दर्शना को जानना प्रस्तुत संगोष्ठी का अभीष्ट है।

मुख्य विषय : अहिंसा का दर्शन और गाँधी

उप-विषय

1. भारतीय संस्कृति, अहिंसा और गाँधी
2. अहिंसा जीवनमूल्य और गाँधी
3. जैनों की अहिंसा और गाँधी
4. बौद्धों की अहिंसा और गाँधी
5. ईसाई परंपरा, अहिंसा और गाँधी
6. इस्लाम, अहिंसा और गाँधी
7. अहिंसा दर्शन का उपादेय और गाँधी
8. अहिंसा दर्शन की परंपरा और गाँधी
9. साध्य और साधन की सुचिता का जीवन-दर्शन और गाँधी
10. सत्य और अहिंसा का युग्म-दर्शन और गाँधी
11. सात सामाजिक पाप, अहिंसा का दर्शन और गाँधी
12. अहिंसा: करुणा का रसोद्रेक
13. सत्य के आग्रह का सत् और अहिंसा का उद्विकास
14. क्रियात्मक प्रेम का दर्शन: प्ररिप्रेक्ष्य अहिंसा
15. अहिंसा: एक जैव-रसायन और शांति का सौंदर्य
16. अहिंसा: नकारात्मक शब्द प्रत्यय का सकारात्मक स्वरूप

- **संगोष्ठी शोध-पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि : 15 फरवरी, 2020**
- **संगोष्ठी-पत्र संप्रेषण हेतु ई-मेल : isgsnpmodi@gmail.com**
- **हिंदी में युनिकोड (Kokila Font 12) अग्रेजी में Times New Roman(Font 12, Space 1.5 cm)**

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् 1977 में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतीय दर्शन की पूरी परंपरा को अपने प्राचीन मूल रूप से वापस लाने और पोषण करने तथा नए विचारों को आवश्यक प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए उच्चतर अनुसंधानपरक एक स्वायत्त संगठन के रूप में स्थापित किया गया, जो विशेष रूप से दर्शन के गंभीर शोध एवं भारत की सतत् जीवंत दार्शनिक परंपरा के संरक्षण के लिए संभावना पर विचार करने हेतु गठित समिति के निर्णय का परिणाम है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविलय, वर्धा

मध्य भारत के सतपुड़ा रेंज की पहाडियों पर अवस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय गांधी के सपनों का भारत की तरह भारत के सपनों का विश्वविद्यालय है। महात्मा गांधी के सपनों के भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का भी था। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के उद्गम से उद्गमित नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी, 1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्तराष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। यह संभव हुआ वर्ष 1997 में – जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्धा में हुई। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच,चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबलहिंदी' की राह पर यह मील का पत्थर है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन व कार्य-व्यवहार में गांधी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी केंद्रबिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबध्द है।

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

गांधी एवं शांति अध्ययन सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रभावशाली कदम है। यह विषय गांधी की अवधारणा और शांति से इसकी संबद्धता को व्यापक दायरे में समझने की एक दृष्टि देता है। अंतरानुशासनिक चरित्र का यह पाठ्यक्रम नैतिक-दष्टि, सुशासन, विकेन्द्रीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का सरंक्षण एवं इसकी राजनीति के साथ-साथ भू-राजनीति एवं सतत विकास की शिक्षा को अपने में शामिल करता है। यह विषय विद्यार्थी को सतत विकास एवं शांति के साथ उसकी संबद्धता को शिक्षण, शोध एवं विस्तार के व्यापक कार्यक्रमों तक पहुँचाता है। गांधी एवं शांति के विभिन्नपहलुओं को व्यापक-दृष्टि से व्याख्यायित करने वाला यह पाठ्यक्रम न सिर्फ विद्यार्थियों के कौशल एवं क्षमता निर्माण में वृध्दि करता है, बल्कि उन्हें विकास एवं शांति के क्षेत्रमें आनेवाली समस्याओं और चुनौतियों को समाधान के लिये प्रेरित भी करता है। गांधी के मूल्यों एवं सिध्दांतों के प्रति गंभीर अध्ययन व शोध के साथ-साथ मानवता के लिए प्रतिबध्दता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम सन् 2004 से संचालित किया गया है। अंतरानुशासनिक पध्दति से तैयार यह पाठ्यक्रम संपूर्ण मानविकी एवं समाज वैज्ञानिक अध्ययन का ऐसा सम्मिलित अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न ज्ञानानुशासनों को देखने व समझने की नई दृष्टि देता है।

कार्यक्रम-विवरण

प्रथम दिवस : 25 फरवरी, 2020

गालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

जलपान एवं पंजीकरण: 9:00

उद्घाटन सत्र : प्रात: 10:00-12:00

चाय अंतराल : 12:00-12:15

प्रथम अकादमिक सत्र : 12:15-1:30

भोजन अवकाश : 1:30-2:30

द्वितीय अकादमिक सत्र : 2:30-4:00

चाय अंतराल: 4:00-4:15

तृतीय अकादमिक सत्र : 4:15-5:45

अल्पाहार एवं चाय : 5:45

द्वितीय दिवस : 26 फरवरी, 2020

गालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ

जलपान : 8:30- 9:00

चतुर्थ अकादमिक सत्र : 9:15-10:15

चाय अंतराल : 10:15-10:30

पंचम अकादमिक सत्र : 10:30-11:45

चाय अंतराल : 11:45-12:00

षष्ठ अकादमिक सत्र : 12:00-01:30

भोजन अवकाश : 1:30-2:30

समापन सत्र : 2:30-4:30 बजे

अल्पाहार एवं चाय : 04:30

संरक्षक

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

कुलपति: म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. रमेश चन्द्र सिन्हा

अध्यक्ष : भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

सह-संरक्षक

प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रतिकुलपति

प्रो. चंद्रकांत एस रागीट, प्रतिकुलपति

आयोजन समिति

संयोजक

प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी(मो. 9970251073)

अधिष्ठाता: संस्कृति विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

समन्वयक

डॉ. मनोज कुमार राय (मो. 9404822608)

डॉ. डी.एन.प्रसाद (मो. 9420063304)

डॉ. राकेश कुमार मिश्र (मो. 9970251140)

डॉ. चित्रा माली (मो. 9422905721)

परामर्शदात्री समिति

प्रो. मनोज कुमार, अधिष्ठाता : शिक्षा विद्यापीठ

प्रो. प्रीति सागर, अधिष्ठाता : साहित्य विद्यापीठ

प्रो. कृपाशंकर चौबे, अधिष्ठाता : मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

प्रो. अवधेश कुमार शुक्ल, अधिष्ठाता : छात्र कल्याण

आमंत्रण

गाँधी 150वीं के परिप्रेक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

मुख्य विषय : अहिंसा का दर्शन और गांधी

25-26 फरवरी, 2020

आयोजक

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

एवं

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

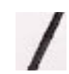

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

गांधी हिल्स, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र)

दूरभाष: 07152- 230313 /मो. 9970251073

bley : isgsnpmodi@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

पंजीकरण प्रपत्र

गांधी 150वीं के परिप्रेक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 25-26 फरवरी, 2020

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

अहिंसा का दर्शन और गाँधी

गांधी एवं शांतिअध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

एवं

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली

1. नाम :- ....
2. पदनाम/विभाग :- ....
3. संस्थान :- ....
4. पता :- ....
5. मोबाईल :- ....
6. ई-मेल :- ....
7. शोध-पत्र :- ....
8. सहभागिता/प्रपत्र वाचन :- ....
9. गांधी के प्रति एक वाक्य :- ....

हस्ताक्षर